**तलाश**

तलाश एक वैचारिक आंदोलन है जिसका उद्देश्य, मकसद आम आदमी के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना है l उनके शरीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करना क्योंकि कोई स्वस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन को बेहतर तरिके से जी सकता है l दूसरे के जीवन को बेहतर करने में मदद कर सकता है l तलाश जिसमें कोष, कुर्सी और पद तीनों नहीं है पर इसके संचालन हेतु संयोजक होते हैंl इसके गतिविधि को चलाने के लिए, कार्यक्रम का संचालन सुचारु रूप से चलाने हेतु संयोजक चुने जाते हैं l

देश-दुनिया में समस्याओं का अंबार लगा है l तलाश का काम उन समस्याओं को तलाशने के साथ उसके संभव निदान को भी ढूंढना है l समस्याओं को पूर्णत: हम खत्म नहीं कर सकते पर उसमें कमी तो जरूर लाए जा सकते हैं l तलाश में जुड़े सदस्य अपने अपने क्षेत्र के अनुभवी लोग हैं जिनका व्यवहारिक जीवन में खट्टे मीठे अनुभव हासिए पर जीने वाले आम नागरिकों के लिए लाभकारी होना संभव है l

इससे जुड़े सदस्यों की लालसा सिर्फ समाज को कुछ देने की होती है कुछ लेने की नहीं l इसी कारण बहुत सारे सदस्य दो दशकों से इससे जुड़े हैं और अपने अनुभवों से तलाश को सशक्त करने के साथ समाज को भी लाभ पहुंचा रहे हैं l तलाश के सदस्य निजी स्तर पर या सामूहिक स्तर पर समाज/मोहल्ले/राज्य और देश के समस्याओं की तलाश करते हैं और फिर तलाश के सदस्यों द्वारा निजी या सामूहिक रूप से उनकी समस्याओं के निदान हेतु प्रयास करते हैं l

* किसी कार्यक्रम करने की स्थिती में मिलजुलकर धन संग्रह किया जाता है और कार्यक्रम को अंजाम दिया जाता है l
* तलाश द्वारा बार्षिक पत्रिका निकला जाता है जिसके माध्यम से लोगों के बीच अच्छा सन्देश दिया जा सके l

**समस्याओं का समाधान**

* समाज या मोहल्ले के नागरिक संगठनों के साथ संयुक्त रूप से बैठकर उचित निर्णय कर समस्या समाधान हेतु
* संबंधित सरकारी विभागों के अधिकारियों से बात कर समस्या का समाधान करवाना l
* समस्या समाधान हेतु संबंधित विभागों के जिम्मेदार पदों पर बैठे अधिकारी कर्मचारी के साथ पत्राचार करना l
* समस्यों की तरफ ध्यान आकृष्ट करने हेतु पत्राचार किया जाना ताकि समस्या का समाधान हो सके l

**उदाहरण** : सड़कों की सफाई, स्कूलों में शिक्षकों का लेट आना, अस्पतालों में डॉक्टरों का देर से आना या किसी कार्यालय में कर्मचारियों का देर से आना, सड़कों का अच्छे से निर्माण किया जाना, मोहल्ले के नालों की सफाई की कमी, कार्यालयों में भ्रष्टाचार जैसे कई कारण हो सकते हैं जिसके लिए तलाश के मूल मंत्रों का भी उपयोग किया जाता है l देश व समाज हित में राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर के मंत्रियों के साथ पत्राचार किया जाना तलाश के कार्यों में शुमार रहा है ताकि आम आदमी के हित में नियमों का निर्माण हो सके, समस्यों का समाधान और लोगों का जीवन स्तर बढ़ सके l

**सुलेख प्रतियोगिता**

हम जानते हैं कि बच्चे देश के भविष्य हैं l वे कल केा देश के निर्माता व सर्जक होंगे l उन बच्चों में देश व समाज के प्रति सकारात्मक सोच भरने के साथ उनके व्यक्तित्व के विकास हेतु तलाश द्वारा सुलेख व वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता रहा है l

सुलेख हमारे आंतरिक विचारों के प्रतिबिंब हैं l अगर हम अंदर से सशक्त होंगे तो हमारे विचारों में उसका सौंदर्य झलकता है l यह सौंदर्य जो सुलेख के रूप में कागज पर उतरता है उससे हमारे व्यक्तित्व की पहचान बनती है l इसके लिए सामान्य तौर पर तलाश द्वारा प्रत्येक बच्चों को एक छपे पेपर दिए जाते हैं पेपर के दोनों पृष्ठों पर एक लाइन छपे होते हैं l एक तरफ गलत को गलत कहे और दूसरे पृष्ठ पर अच्छे को अच्छा कहें छपा रहता है जिसे बच्चे देखकर अपने खाली पंक्तियों को पूरा करते हैं और सभी कक्षा के प्रत्येक खण्ड से चयनित 3 बच्चों को पुरस्कृत किया जाता है जिसके लिखावट सुंदर होते हैं l

**सुलेख की आवश्यकता**

* जल्दी बाजी में लिखे गए शब्द हमारे अंतर्मन की कुंठा और आक्रोश का परिचायक है वहीं लापरवाही भी प्रदर्शित होती है
* समाज में प्रतिष्ठित पदों पर सुशोभित व्यक्तियों से अपनी हैंडराइटिंग में सुधार की अपेक्षा की जाती है l
* लोगों द्वारा अपने राइटिंग में सुधार कम ही कर पाएंगे पर बच्चे अपनी कॉपी में पेन पेंसिल से सुलेख लिखने का प्रयास कर सकते हैं
* लिखावट शैक्षिक व व्यवसायिक गतिविधियों को काफी प्रभावित करता है l
* यह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है यह अपने आप में एक कला है
* सुलेख के विशेषज्ञ किसी व्यक्ति के हस्तलिपि को देखकर लिखने वाले व्यक्ति का मिजाज, भूत, भविष्य वर्तमान बताने का दवा करते हैं l

**विद्यालयों में सुलेख प्रतियोगिता कराने का उद्देश्य**:--

* बच्चों के भविष्य उनके व्यक्तित्व को निखारने व प्रोत्साहित करना l
* अच्छे विचारों से उनके मन मस्तिष्क भरना जिससे भविष्य में अच्छे विचारों का बीजारोपण से अच्छे विचार रूपी पौधे बड़े होकर समाज व देश के लिए लाभकारी हो सके l
* चयनित बच्चों को महान व सफल व्यक्तित्व से संबंधित पुस्तकें दी जाती है जिसे पढ़कर उनके जीवन से प्रेरणा पा सके और उनके मन मस्तिष्क जल्दी परिपक्व हो सके जिससे समाज के लिए भी उनके मन मस्तिष्क में समझ विकसित हो सके l

**लिखावट में सुधार**

* शब्दों और अक्षरों को सही तरीके से लिखना चाहिए एवं लेखन सामग्री पर ध्यान देना चाहिए
* लिखने की आदत बनी रहनी चाहिएl किसी भी विषय को लेकर प्रतिदिन एक अनुच्छेद लिखना चाहिए l लिखते वक्त शब्दों पर ध्यान देना चाहिए l
* शब्दों के आकार एवं लिखावट की सफाई पर ध्यान रखना चाहिए l
* लिखावट में ज्यादा दबाव व जल्दीबाजी नहीं चाहिए l
* जितना ज्यादा लिखा जाएगा लिखावट में उसी अनुरूप अंतर आएगा l
* लिखते वक्त एकाग्र चित्त रहना उचित होगा l

**सुलेख के टिप्स**

* शरीर को सही स्थिति में ला कर लिखना l
* तीन उंगलियों का उपयोग एवं दो उंगलियों को आराम देना l
* कागज पर मुख्य रूप से रेखा खींचकर अक्षरों का सुलेख लेखन करना l
* ऊपर से नीचे बा बाएं से दाएं और लिखा जाना l
* लिखते वक्त हाथ की स्थिति ना बदलते हुए कौन की स्थिति बदल सकता है l
* तेज व धीमी चाल से बचते हुए सुविधाजनक ताल का उपयोग करना ठीक रहता है l

**लिखावट का विश्लेषण**

* जितना लिखते हैं उतना विश्लेषण संभव है l
* अक्षरों के मूल आकार को पहचानना जरूरी है l
* अक्षरों के तिरछापन को ध्यान रखना जरूरी हैl क्योंकि यह लिखावट को बना-बिगाड़ सकता है l
* लिखते वक्त संरेखण को ध्यान में रखना जरूरी है l यदि शब्द लाइन से बाहर अलग-अलग दिशा या रेखा के विपरीत जा रहा है तो इस पर ध्यान देना जरूरी है l
* शब्दों की बीच की दूरी लिखावट के गुणवत्ता को दर्शाता है l
* दो पंक्तियों के बीच ज्यादा जगह या कम जगह लेना दोनों ही ठीक नहीं है l
* भारी या हल्की दबाव में लिखना दोनों लिखावट को प्रभावित करता है l इससे बचना चाहिए l

**विद्यालय जहां सुलेख प्रतियोगिता कराई गई**

* आदर्श विकास हाई स्कूल, पोस्टल पार्क पटना
* दून पब्लिक स्कूल, इंदिरा नगर पटना
* देल्ही मॉडल पब्लिक स्कूल, कंकड़बाग, पटना
* बीडी पब्लिक स्कूल, बुद्धा कॉलोनी पटना
* न्यू एरा पब्लिक स्कूल, कंकड़बाग, पटना
* कॉमेंट बॉयज स्कूल राजेंद्र नगर पटना
* सैंट अग्नेस स्कूल पोस्टल पार्क, पटना
* पटना कान्वेंट, राम कृष्णा नगर, पटना
* होली फेथ इंटरनेशनल स्कूल, राम कृष्णा नगर, पटना
* माउंट कॉन्वेंट स्कूल, मीठापुर, पटना

इसके अलावे विहार के कई जिलों में सुलेख व वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया l जहाँ बच्चों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और इस गतिविधि को अविभावकों द्वारा खूब सराहा गया l